१. क्षेत्र –अध्ययन

राहुल की कक्षा के सभी विद्यार्थी और विद्यालय के सभी अध्यापक उस्मानाबाद जिले के नलदुर्ग से रायगढ़ जिले के अलिबाग की ओर क्षेत्र- अध्ययन हेतु निकले हैं। इस यात्रा के लिए विद्यालय ने राज्य परिवहन निगम (एस.टी.) की बस ली है। इस क्षेत्र-अध्ययन हेतु राहुल और उसके मित्रों ने अध्यापकों के निर्देशों के अनुसार नियोजन किया है। हम जानेंगे कि नलदुर्ग से अलिबाग की यात्रा के दौरान भू-आकृतियों, मृदा, वनस्पतियों और अधिवासों में दिखाई देनेवाले अंतर का अनुभव छात्र किस प्रकार ले रहे हैं।

विद्यार्थियों और अध्यापकों के बीच हो रहे वार्तालाप पढ़िए ।

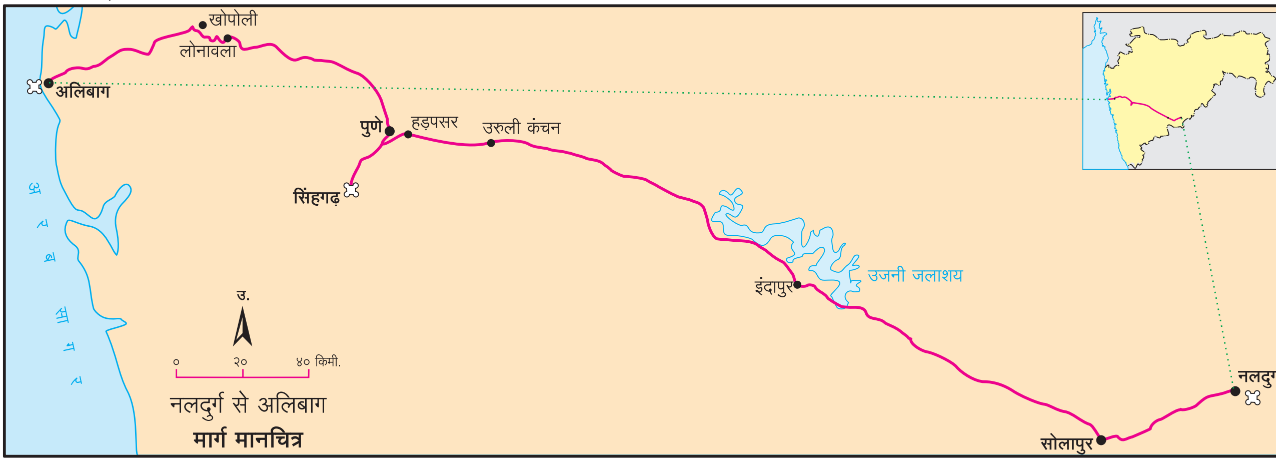

आकृति १.१ : क्षेत्र-अध्ययन का मार्ग

व्यक्तिगत सामग्री और परिचय पत्र के अतिरिक्त क्षेत्र –अध्ययन हेतु विद्यार्थियों ने निम्नांकित सामग्री ली है ।

आकृति १.२ : क्षेत्र-अध्ययन हेतु सामग्री

चर्चा कीजिए ।

- यदि आप इस अध्ययन-यात्रा में शामिल हो रहे होते तो आप क्या तैयारी करते ?
- मान लीजिए, अध्यापकों ने इस अध्ययन का नियोजन आपको करने के लिए कहा तो आप विस्तृत नियोजन कैसे करेंगे ?

पहला दिन : प्रातः ६.०० बजे ।

अध्यापिका : अब हम नलदुर्ग से सोलापुर की ओर जा रहे हैं। सोलापुर के पास हम जलपान और पुणे में सिंहगढ़ के पास हम दोपहर का भोजन करेंगे। आप पूरी यात्रा के दौरान रास्ते के दोनों ओर का निरीक्षण कर निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर अपने अवलोकन अपनी कापी में लिखिए:

• भू-आकृति • जलाशय • वनस्पतियाँ • मृदा • कृषि
• मानव अधिवास (बस्ती) • अधिवासों का प्रतिरूप

राहुल : हाँ, मैडम, यहाँ कहीं उतार-चढ़ाव वाली भू-आकृति है तो कहीं समतल भूमि है। कहीं-कहीं खेती भी दिख रही है।

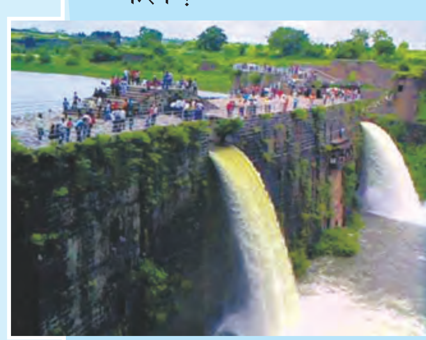

आकृति १.३ : नलदुर्ग स्थित नर-मादा जल प्रपात

साक्षी : रास्ते के किनारे छोटे- छोटे घर हैं। चाय की दुकानें, ढ़ाबे, पेट्रोलपंप, एवं अन्य दुकानें भी दिख रही हैं।

अध्यापिका : मीना, आप बताइए।

मीना : मैडम, क्या अब हम ढलान वाले रास्ते से जा रहे हैं?

अध्यापिका : सही कहा, अब हम बालाघाट पर्वत श्रेणी के दक्षिण में हैं। बालाघाट पर्वत श्रेणी सह्याद्रि पर्वत के पूर्व में फैली एक शाखा है। दिए गए मानचित्र और बाहर की भू-आकृति को देखते रहिए। आप भूसंरचना में दिखने वाले परिवर्तनों को आसानी से देख सकते हैं। अब मुझे घरों और उनके प्रतिरूपों के बारे में कौन बताएगा ?

सूरज : मैडम, ग्रामीण भागों में रास्ते से सटे हुए घर एक पंक्ति में हैं। इन घरों की दीवारें पत्थर और मिट्टी की बनी हैं। घरों के छप्पर के लिए लकड़ी और मिट्टी का उपयोग दिखाई दे रहा है।

रेणुका : इस क्षेत्र में अधिकांश जगह पर घास दिखाई दे रही है जो सूखी है। कुछ स्थानों पर निष्पर्ण वृक्ष दिखाई दे रहे हैं।

अध्यापिका : सूरज, रेणुका, सही उत्तर ! ऐसे घरोंवाले अधिवास (बस्तियाँ) रेखीय अधिवास कहलाते हैं, यह हमने सातवीं कक्षा में सीखा है। इन घरों को लकड़ी-मिट्टी के छत वाले घर कहते हैं। ये विशिष्ट प्रकार से बनाए गए पारंपरिक घर हैं। यहाँ की वनस्पतियाँ शुष्क प्रदेश की पर्णपाती प्रकार की हैं जिसकी पत्तियाँ विशिष्ट मौसम में गिर जाती हैं। (कुछ देर बाद सोलापुर आया।)

अध्यापक : अब हम सोलापुर शहर में आ चुके हैं। शहरी भागों में जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है । इसीलिए यहाँ बहु-मंजिली इमारतें दिखाई देती हैं। ये इमारतें सीमेंट, रेत, गिट्टी और पानी के मिश्रण से ईंटों की सहायता से बनाई जाती हैं। शहरों में रास्तों के किनारे मॉल, बड़े होटल और अनेक सुविधाओं से युक्त दुकानें होती हैं।

(विद्यार्थी शहरी भागों की भिन्नता का निरीक्षण करने लगे। सोलापुर शहर से बाहर जाते ही अध्यापकों ने राहुल को जलपान के पैकेट विद्यार्थियों को बाँटने के लिए कहे। विद्यार्थियों ने जलपान किया।)

अध्यापिका : अब हम सोलापुर शहर से बाहर निकल रहे हैं । बच्चों, आस-पास की खेती देखिए। आप जो देख रहे हैं उसको लिखिए।

(विद्यार्थी रास्ते के दोनों ओर का निरीक्षण करते रहे और अपनी कापी में लिखते रहे। विद्यार्थी यह कार्य काफी देर तक करते रहे।)

सावित्री : मैडम, मुझे यहाँ हरे-भरे खेत दिखाई दे रहे हैं। नलदुर्ग के पास फसलें झाड़ी की तरह थीं और कहीं-कहीं पर ही गन्ने की खेती थी। पर यहाँ तो सभी जगह गन्ने ही गन्ने हैं !

आकृति १.४ : मिट्टी की छतवाला घर

आकृति १.५ : सड़क और दुकाने

- क्षेत्र-अध्ययन के दौरान निरंतर किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे ?

आकृति १.६ : शुष्क क्षेत्र की वनस्पति

- लकड़ी और मिट्टी से बने घरों के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।

आकृति १.७ : दलहन की खेती

- दलहन की खेती एवं कम वृष्टि का सह-संबंध जोड़िए।

अध्यापिका : सही कहा! नलदुर्ग के पास हमने मूँग, उड़द एवं अन्य प्रकार के दलहनों की खेती देखी। अब यहाँ सभी जगह मुख्यतः गन्ने की खेती हो रही है क्योंकि यहाँ सिंचाई की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

आकृति १.८ : गन्ने का खेत

सावित्री : जी मैडम, अभी कुछ देर पहले हमने एक नहर पार की थी और अब मुझे सामने एक बड़ा जलाशय दिख रहा है। ये कौन-सा जलाशय है, मैडम ?

(अध्यापकों ने बस चालक को इंदापुर के पास रास्ते के किनारे बस रोकने के लिए कहा। सभी विद्यार्थी बस से उतरे और अध्यापकों के पास जाकर खड़े हो गए।)

आकृति १.९ : उजनी बांध का जलाशय

- 'बहुउद्देशीय परियोजना' के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।

अध्यापिका : आपके पास का मानचित्र देखिए। जैसा कि उसमें दिखाया गया है आपके दाईं ओर भीमा नदी पर स्थित उजनी बांध का जलाशय दिख रहा है। इस बांध के पानी का उपयोग पीने के लिए होता है। विद्युत उत्पादन, उद्योग-धंधों, मत्स्य-उत्पादन के साथ ही सिंचाई हेतु भी किया जाता है। ऐसे कई उद्देश्य इस बांध से पूर्ण होते हैं। (कुछ विद्यार्थियों ने इस परिसर की तस्वीरें लीं और पुनः बस में जाकर बैठ गए तथा उनकी यात्रा पुनः प्रारंभ हुई।)

पूजा : मैडम, यह भाग तो मुझे मैदानी लग रहा है।

अध्यापिका : हाँ, अब हम मैदानी क्षेत्र से गुज़र रहे हैं। यह प्रदेश भी दक्कन के पठार का ही हिस्सा है । जैसे-जैसे हम पश्चिम की ओर जाएँगे, वैसे-वैसे हमें वनस्पतियों और प्राकृतिक भू-आकृतियों में अधिक परिवर्तन देखने को मिलेंगे।

(कुछ घंटों की यात्रा के बाद बस ने हड़पसर से मुख्य रास्ता छोड़ा और वह सिंहगढ़ की ओर बढ़ने लगी। सिंहगढ़ की तलहटी के पास अनेक छोटे-बड़े होटल थे। वहाँ पहुँचने पर रास्ते के किनारे खुली जगह पर दोपहर का भोजन किया और उन्होंने थोड़ी देर विश्राम किया।)

आकृति १.१० : उजनी बांध का जलाशय

नजमा : जब हम नलदुर्ग के पास थे तब वहाँ बेर एवं बबूल के वृक्ष अधिक दिखाई दे रहे थे। यहाँ कुछ अलग-अलग वृक्ष दिखाई दे रहे हैं।

अध्यापिका : बहुत खूब! नलदुर्ग पार करते समय वहाँ अर्द्ध-शुष्क प्रदेश की काँटेदार वनस्पतियाँ दिखाई दे रही थीं। वनस्पतियों में होने वाला परिवर्तन उस प्रदेश की वृष्टि के प्रमाण का सूचक है । अब हम जो वृक्ष देख रहे हैं उनमें अंजन, बरगद एवं पीपल मुख्य हैं । अब हम सिंहगढ़ की तलहटी में हैं। जब हम सिंहगढ़ के शीर्ष पर पहुँचेंगे तब हम सहयाद्रि से निकलने वाली पर्वत श्रेणियाँ देखेंगे। अब तुम अपने साथ सिर्फ परिचय पत्र कापी, कलम, दूरबीन, कैमेरा, टोपी, मानचित्र एवं पानी की बोतल ही लीजिए। कपड़ों की थैली एवं अन्य साहित्य गाड़ी में ही रहने दे ।

- 'वनस्पतियाँ वृष्टि की मात्रा में के अंतर को दर्शाती है' क्या यह कथन सही है ? वृष्टि में अंतर और कैसे ध्यान में आ सकता है ?

(जब सिंहगढ़ की चढ़ाई प्रारंभ की थी तब धूप थी। फिर आकाश में बादल छाने लगे। कुछ देर बाद बौछार भी आई। रास्ते में विद्‌यार्थियों ने वहाँ मिलने वाली उबाली हुई मूँगफलियाँ, छाछ, दही आदि व्यंजनों का स्वाद लिया। आकर्षक प्राकृतिक दृश्य, आस-पास की वनस्पतियाँ, पक्षी और दूर तक फैला पुणे शहर भी देखा। किले के विभिन्न भागों की तस्वीरें लीं। उसके बाद अध्यापकों ने उन्हें एक विशिष्ट जगह पर एकत्रित होने की सूचना दी।)

अध्यापिका : अब हम सिंहगढ़ किले पर हैं। इस किले के बारे में जानकारी आप कैसे प्राप्त करेंगे ?

नेहा : मैडम, हमने प्रवेशद्‌वार पर एक सूचना फलक देखा था। उस फलक पर सिंहगढ़ के बारे में जानकारी दी गई थी। हमने उसका छायाचित्र ले लिया है।

अध्यापिका : बहुत खूब, नेहा! अब भूसंरचना में होने वाले अंतर को कौन बताएगा ?

कासिम : पहले हमने कम ढलानवाला और मैदानी प्रदेश देखा, पर अब यह पहाड़ी क्षेत्र है।अधिक ऊँचाई पर होने के कारण हम बादलों का भी अनुभव ले रहे हैं।

अध्यापिका : बहुत खूब कासिम! हमें यहाँ से घाटियाँ, पर्वत, पहाड़ियाँ, पर्वतशिखाएँ एवं ज्वालामुखियों के विस्फोट से बनी चट्‌टानों की परतें, ऐसी कई प्राकृतिक विशेषताएँ दिखाई दे रही हैं। क्या आपने पहचाना की यह कौन-सी चट्‌टान है ? किले पर चढ़ते समय कुछ स्थानों पर आपने मार्ग में भूस्खलन के अवशेष भी देखे होंगे। अब आस-पास के प्रदेश में की जाने वाली कृषि के आकृतिबंधों के बारे में बताइए।

राहुल : मैडम, यह बेसाल्ट है, जो कि एक दक्षिण-पूर्वी चट्‌टान है। इसके बारे में हमने छटीं कक्षा में पढ़ा था।

मेरी : हम जहाँ रहते हैं, उस प्रदेश में मुख्यतः दलहन की खेती हो रही थी। सोलापुर से पुणे आते समय गन्ने की खेती अधिक दिखाई दे रही थी। अब यहाँ धान (चावल) की खेती दिखाई दे रही है।

अध्यापिका : सही है। इसका मुख्य कारण है इस प्रदेश में होने वाली अधिक वृष्टि। इसके पहले आपने ऐसी रचना वाले गढ़ और कहाँ देखे हैं ? उसमें और इस रचना में क्या अंतर है ?

वहीदा : मैडम, हम इसकी तुलना नलदुर्ग के किले से कर सकते हैं। किंतु, नलदुर्ग सिंहगढ़ की तरह पर्वत पर नहीं है । उसे देखने के लिए चढ़ाई नहीं करनी पड़ती।

अध्यापिका : बहुत खूब! अब हम किले के शीर्ष भाग पर हैं। यह किला पर्वत

आकृति १.११ : सिंहगढ़ का प्रवेशद्‌वार

आकृति १.१२ : भूस्खलन के अवशेष

- पक्षियों को ऊँचाई से नीचे का भूभाग कैसा दिखता होगा ?

आकृति १.१३ : सिंहगढ़ से दिखने वाला खडकवासला जलाशय

- महाराष्ट्र का पठार किससे बना है ? यहाँ मुख्यतः कौन-सी चट्‌टानें पाई जाती हैं ?

आकृति १.१४ : चट्‌टानों की परतें

के शीर्ष पर बना है। ऐसे किलों को गढ़/दुर्ग कहते हैं। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए एवं आस-पास के क्षेत्र पर निगरानी रखने हेतु ही इस किले का निर्माण किया गया था। नलदुर्ग ज़मीन पर बना किला है। किले हमारे राज्य की धरोहर हैं।

यहाँ आइए और नीचे की ओर देखिए । सामने जो पानी का भंडार दिख रहा है वह खड़कवासला बांध का जलाशय है। इस बांध के पानी से पुणे शहर और आस-पास के क्षेत्रों को जल की आपूर्ति होती है। अब हम कल्याण दरवाज़े की ओर चलते हैं। यहाँ आइए और यह संरचना देखिए। इसे देवटंकी (देवटाका) कहा जाता है। प्राकृतिक सोते से आनेवाला पानी यहाँ आकर इकट्ठा होता है। इससे गढ़ पर रहने वाले लोगों को अभी भी वर्षभर पानी मिलता है।

सभी विद्यार्थी (आश्चर्य व्यक्त करते हुए) : बापरे ! इतनी शताब्दियों से इतनी ऊँची जगह पर पानी कैसे मिलता होगा?

(बाद में अध्यापक सभी विद्यार्थियों को बेसन और ज्वार की रोटी मिलनेवाली झोपड़ी की ओर ले गए। ऐसी अनेक झोपड़ियाँ विद्यार्थियों ने वहाँ देखीं। पर्यटकों के खाने-पीने की सुविधाएँ यहाँ थीं। सिंहगढ़ पर कुछ समय व्यतीत करने के बाद सभी विद्यार्थी नीचे उतरे और बस में बैठ गए। रात में ठहरने के लिए बस पुणे शहर की ओर निकल पड़ी। शहर में पहुँचते ही शाम का जलपान और चाय लेने के उपरांत वे बाज़ार में घूमने के लिए तैयार हो गए।)

अध्यापिका : हम थोड़ी देर में पुणे के लोकप्रिय शनिवारवाड़ा और बाज़ारों के लिए प्रसिद्ध तुलसीबाग, रविवार पेठ, महात्मा फुले मंडी, आदि स्थलों पर घूमेंगे। इन स्थानों पर थोक एवं खुदरा बाजार हैं। यहाँ आप कुछ खरीददारी भी कर सकते हैं। पर अपने निरीक्षणों को कापी में लिखना न भूलें। (घूमने के बाद सभी ठहरने के स्थान पर लौटकर रात का भोजन कर सो गए)

दूसरा दिन : प्रातः ७.०० बजे

(सुबह का जलपान होने के बाद बस अलिबाग की ओर चल पड़ी।

अध्यापिका : अब हम मुंबई-पुणे द्रुतगति महामार्ग से जा रहे हैं। अब हम लोनावला के पास राजमाची में रुकेंगे। क्या आपको भू-आकृति में कुछ परिवर्तन दिखाई दे रहा है ?

तुषार : हाँ मैडम। हम भले ही समतल रास्ते पर जा रहे हों, पर आस-पास पहाड़ी प्रदेश दिखाई दे रहा हैं। घरों की संख्या भी कम हो रही है। (लोनावला से आगे जाकर बस राजमाची के पास जा कर रुकी। अध्यापकों ने भू-आकृति के विषय में जानकारी दी।)

आकृति १.१५ : धान की खेती

- विभिन्न किलों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए। उसके लिए निम्न बिंदुओं पर विचार कीजिए।

आकृति १.१६ : देवटंकी

आकृति १.१७ : सिंहगढ़ पर मिलनेवाले व्यंजन

अध्यापिका : यह पश्चिमी घाट की ढलान है। इस पर्वतीय भाग को हम 'सह्याद्रि' भी कहते हैं। इस स्थल से हम भूमि के उतार-चढ़ाव का अंतर समझ सकते हैं। पूर्व की ओर की ढलान मंद है तो पश्चिम के ओर की ढलान तीव्र है। पश्चिमी ढलान की ओर अनेक जल प्रपात एवं झरने दिखाई दे रहे हैं। हमने इनके बारे में नौवीं कक्षा में पढ़ा है। इसी क्षेत्र में पश्चिम की ओर बहने वाली उल्हास नदी का उद्‌गम स्थल है। (विद्‌यार्थियों ने वहाँ के छायाचित्र खींचे। बारिश फिर से शुरू हुई। सभी बस में बैठकर आगे की यात्रा पर निकल पड़े)।

नामदेव : (मानचित्र देखकर) मैडम, अब हम घाट उतरकर खोपोली की ओर जा रहे हैं न ?

अध्यापिका : सही कहा! यह पश्चिमी घाट का 'बोर' घाट है। इसे 'खंडाला घाट' भी कहते हैं। अब हम भारत के पश्चिमी किनारे की ओर जा रहे हैं। अब आपको दिखनेवाले वृक्ष, घर, मृदा, आदि का निरीक्षण कीजिए।

शिव : मैडम, इस घाट में विभिन्न प्रकारों की वनस्पतियों से युक्त घने वन दिखाई दे रहे हैं। उसमें बड़े पत्तों वाले वृक्षों की संख्या अधिक है। ऐसे वृक्ष सिंहगढ़ के आस-पास भी हमने देखे थे।

अध्यापिका : ये सागौन के पेड़ हैं। यह पर्णपाती वनों का प्रदेश है। इस भाग में अनेक वनराइयाँ एवं देवराइयाँ हैं। (घाट पार करने पर वनों का घनत्व कम हो रहा था । धान की खेती और औद्‌योगिक क्षेत्र दिखाई देने लगे थे।)

नजमा : हवा में परिवर्तन महसूस हो रहा है। अब गर्मी बढ़ने लगी है और पसीना भी निकल रहा है।

अध्यापिका : हवा में आर्द्रता बढ़ने के कारण पसीना आता है और त्वचा चिपचिपी हो जाती है। जैसे-जैसे हम सागर के समीप जाते हैं वैसे-वैसे आर्द्रता बढ़ती जाती है।

नामदेव : मैडम, इस क्षेत्र में वर्षा शुरू हो चुकी है और ऐसा लगता है कि यहाँ वृष्टि की मात्रा भी अधिक होगी। इसीलिए यहाँ ऐसा होता होगा।

अध्यापिका : नामदेव का निरीक्षण बिलकुल सही है। इस क्षेत्र में अधिक वर्षा के कारण एवं सागर की समीपता के कारण ऐसा होता है। वृष्टि की मात्रा अधिक होने के कारण धान यहाँ की प्रमुख फसल है। थोड़ी ही देर में हम सागर के तट पर पहुँच जाएँगे। क्या आप मुझे इस सागर का नाम बता सकते हैं ?

सभी : (एक स्वर में) अरब सागर !

अध्यापिका : बहुत बढ़िया! अलिबाग पहुँचते ही हमारे ठहरने के स्थान पर

आकृति १.१८ : राजमाची

आकृति १.१९ : सह्याद्रि पर्वतों में स्थित जल प्रपात

- प्रदेश एवं आवश्यकताओं के अनुसार आजीविका के साधनों में फर्क पड़ता है। आपको क्या लगता है ?
- यह क्षेत्र-अध्ययन किस कालावधि के दरम्यान हुआ होगा इसका अंदाजा लगाइए।

आकृति १.२० : देवराई

आकृति १.२१ : वनराई

पहुँचने के पहले हम पटवारी (तलाठी) कार्यालय जाएँगे। वहाँ आप विद्‌यालय में तैयार की गई प्रश्नावली के आधार पर जानकारी प्राप्त किजिए।

आकृति १.२२ : सागौन के वृक्ष

उर्मी : हम उन्हें आस-पास की फसलों, मृदा के प्रकारों, फलों एवं अन्य नकदी फसलों के बारे में प्रश्न पूछेंगे। साथ ही आस-पास से वसूल किया जाने वाला राजस्व, सिंचित क्षेत्र, अपवाह क्षेत्र कार्यक्रम एवं ग्रामीण क्षेत्र के अन्य व्यवसायों से संबंधित प्रश्न भी पूछेंगे।

(दोपहर में अलिबाग पहुँचते ही सभी पटवारी कार्यालय गए। वहाँ उन्होंने उपरोक्त मुद्‌दों पर जानकारी हासिल की।)

अध्यापिका : भोजन के बाद हम सागरीय तट पर जाएँगे। आपमें से कितने विद्‌यार्थी आज पहली बार प्रत्यक्ष रूप से सागर देखेंगे ? (अधिकांश बच्चों ने हाथ ऊपर किए।)

अबीरा : मैं तो अभी से सागर के रोमहर्षक दृश्यों की कल्पना कर रही हूँ। वह कैसा होगा ? वहाँ क्या-क्या होगा ? या फिर सिर्फ पानी ही होगा।

- 'देवराई' संकल्पना क्या है ?

अध्यापिका : सच कहा, अबीरा, अब हम तट पर जाएँगे। वहाँ जाने पर कौन-कौन सी सावधानियाँ बरतनी हैं, इसकी स्पष्ट सूचना सभी को पहले ही दी जा चुकी है। यहाँ भी हम एक किला देखेंगे। उसका नाम है कुलाबा का किला या उसे ही अलिबाग का किला भी कहते हैं। ऐसे समय पर हमें ज्वार-भाटे का समय ध्यान में रखना होगा क्योंकि यह किला तट से कुछ दूरी पर सागर में है। नौवी कक्षा में हमने सागरीय लहरों के कार्यों का अध्ययन किया है। लहरों के द्‌वारा बनी हुई कुछ भू-आकृतियाँ हमें इस स्थान पर देखने को मिलेंगी। क्या आप कुछ भू-आकृतियों के नाम बता सकते हैं ?

आकृति १.२३ : कुलाबा का किला

सभी विद्‌यार्थी : (एक स्वर में) पुलिन, सागरीय गुफा, तरंगघर्षित मंच, बालुका-भित्ति

अध्यापिका : अरे वाह! बहुत कुछ याद है तुम्हें......

(सभी ने सागरीय तट और किला देखा। कुछ विद्‌यार्थियों ने घोड़ा गाड़ी का आनंद उठाया तो कुछ ने घुड़सवारी की।)

नेहा : मैडम, पहले देखे हुए दोनों किलों से यह किला अलग है।

अध्यापिका : सही कहा, नेहा क्या तुम यह अंतर बता सकती हो ?

नेहा : हाँ मैडम, यह किला जल में स्थित है। अन्य दोनों किले भूमि पर थे।

अध्यापिका : यह किला तरंगघर्षित मंच पर बनाया गया है। पानी से घिरे होने के कारण ऐसे किले को 'जलदुर्ग' कहते हैं।

पहले सागरीय तटों की रक्षा के लिए ऐसे किलों का निर्माण किया जाता था। पश्चिमी तट पर ऐसे कई किले हैं ।

- सागरीय तट पर जाते समय कौन-कौन-सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए ?
- ज्वार-भाटे का समय जानने का सबसे आसान तरीका कौन-सा है ?

नेहा : हाँ, मैंने इसके पहले जंजीरा, सिंधुदुर्ग ये नाम सुने हैं।

अध्यापिका : अच्छा, एकत्रित की हुई जानकारी के आधार पर यह बताइए कि यहाँ कौन-कौन से व्यवसाय किए जाते हैं ?

राहुल : मैडम, यहाँ मछली पकड़ना एवं कृषि की जाती है।

अध्यापिका : सही कहा राहुल! ये व्यवसाय किस प्रकार के हैं ?

मीना : मैडम, ये प्राथमिक व्यवसाय हैं।

अध्यापिका : सही कहा ! प्रारंभ में यहाँ मछली पकड़ने का व्यवसाय होता था। फिर यहाँ खेती भी होने लगी, किंतु तट से दूर। तट के पास किनारों के घरों में नारियल और सुपारी, कटहल और केले और कुछ मसालों की खेती होती है। यह बागायती कृषि है। अब यहाँ पर्यटन महत्वपूर्ण व्यवसाय बन गया है।

(उसके बाद सभी ने सागरीय तट की रेत में मौजमस्ती की और सूर्यास्त का विहंगम दृश्य कैमेरे में कैद किया। सूर्यास्त के बाद सभी विश्राम स्थल लौटे। क्षेत्र-अध्ययन के वृत्तांत लेखन हेतु उपयुक्त मुद्दों पर चर्चा की, टिप्पणियाँ तैयार कीं। रात का भोजन कर सबने आराम किया। दूसरे दिन सभी की वापसी की यात्रा शुरू हुई।)

आकृति १.२४ : अलिबाग का सागरीय तट

- क्षेत्र-अध्ययन के संदर्भ में आप किन-किन दृश्यों के छायाचित्र खीचेंगे ?
- क्षेत्र-अध्ययन के दरम्यान विभिन्न जानकारियाँ आप कैसे प्राप्त करेंगे ?
- क्षेत्र-अध्ययन का वृत्तांत लेखन आप किन मुद्दों के आधार पर तैयार करेंगे ?

- आप अपने क्षेत्र में भी ऐसा कोई क्षेत्र-अध्ययन आयोजित कीजिए।

उपरोक्त पाठ क्षेत्र-अध्ययन का नमूना है । इस पाठ पर आधारित प्रश्न न दें परंतु स्वाध्याय में दिए गए प्रश्नों की तरह क्षेत्र-अध्ययन से संबंधित प्रश्न पूछें ।

स्वाध्याय

संक्षेप में उत्तर लिखिए :

(अ) आपके द्वारा किए गए क्षेत्र-अध्ययन का वृत्तांत-लेखन कीजिए।

(आ) कारखाने में क्षेत्र-अध्ययन हेतु जाने के लिए प्रश्नावली तैयार कीजिए।

(इ) क्षेत्र-अध्ययन के दौरान कचरे का व्यवस्थापन कैसे करेंगे ?

(ई) क्षेत्र-अध्ययन हेतु आप क्या सामग्री साथ लेंगे ?

(उ) क्षेत्र-अध्ययन की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए।

***

RZJBUG

प्रस्तावना

विद्यार्थी मित्रों, कक्षा छठीं से ही सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में हमने 'भूगोल' विषय का स्वतंत्र रूप से अध्ययन करना शुरू कर दिया था। पृथ्वी के चारों आवरणों से संबंधित विभिन्न संकल्पनाओं, प्रक्रियाओं एवं घटकों से आप परिचित हैं। मानवीय आवसों का विकास कैसे होता है, मानव द्वारा आजीविका हेतु प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कैसे किया जाता है, कच्चे माल का रूपांतरण अधिक उपयोगी पक्के माल में कैसे होता है, ये उत्पाद स्थानिक एवं वैश्विक बाज़ारों में किस प्रकार बिक्री हेतु भेजे जाते हैं, आदि का आपने अध्ययन किया है।

संसाधनों के असीमित उपयोग से होने वाले दुष्परिणामों के विषय में भी हमने जाना है।

भूगोल विषय ध्यानपूर्वक समझने के लिए आपको निम्नांकित क्षमताएँ आत्मसात करनी होंगी:-

• निरीक्षण • वर्गीकरण • अंतर पहचानना • तुलना • आलेख, आकृतियाँ एवं मानचित्र पढ़ना • मूल्यमापन • विश्लेषण • निष्कर्ष • प्रस्तुतीकरण • आलोचनात्मक विचार

इन क्षमताओं को आत्मसात करने हेतु हमारे लिए अब तक सीखी हुई भौगोलिक संकल्पनाओं एवं प्रक्रियाओं का उपयोग कर किसी प्रदेश का अध्ययन कर अपेक्षित अध्ययन क्षमताओं तक पहुँचना आवश्यक है। इसी से हमें भूगोल के ज्ञान का उपयोजन कर सकते हैं। इस कक्षा में हम दो देशों के अध्ययन के संदर्भ में ऐसा करेंगे।

इस वर्ष हम अब तक सीखी गई विभिन्न संकल्पनाओं को दोहराएँगे। यह अध्ययन आपको भूगोल का गहन ज्ञान प्राप्त करने में एवं उसके उपयोजन में सहायता करेगा। साथ ही विभिन्न प्राकृतिक व मानवीय घटनाओं को समझने में उपयुक्त होगा।

भौगोलिक संकल्पनाओं के उपयोजन से प्रदेश की प्राकृतिक विशेषताओं का अध्ययन अच्छी तरह से होता है। स्थानिक लोगों ने कैसे वहाँ की परिस्थितियों में खुद को अनुकूल कर ढाला है, यह हम जान सकते हैं। संसाधनों के अति-उपयोग से निर्माण होने वाली समस्याओं को जान सकते हैं । पर्यावरण ऱ्हास व उससे जुड़े उपायों पर विचार कर सकते हैं। घटनाओं का रुझान ध्यान में रखते हुए उनमें होनेवाले परिवर्तनों को आप समझ सकते हैं। घटनाओं का रुझान देखते हुए भविष्य में क्या होगा इसका आप अंदाज़ा लगा सकते हैं। प्राकृतिक दुर्घटनाओं व आपदाओं का अधिक योग्यतापूर्वक सामना कर सकते हैं। प्रादेशिक असमानताओं को ध्यान में रखकर उनके पीछे के कारणों को समझेंगे और उन पर उपाय सुझाना आसान होगा ।

२. स्थान एवं विस्तार

यहाँ दो देशों के ध्वज एवं कुछ संकेत दिए गए हैं। उनका उपयोग कीजिए। इसके आधार पर दोनों देशों को पहचानिए। इनमें से एक देश तो आप बड़ी सरलता से पहचान सकते हैं और दूसरा देश भी आप पहचान लेंगे।

संकेत

- विश्व में जनसंख्या के आधार पर दूसरा सबसे बड़ा देश-
- विश्व में यह देश मसालों के लिए प्रसिद्ध है।-
- इस देश में क्रिकेट लोकप्रिय है।-

- यह देश सांबा नृत्य के लिए प्रसिद्ध है।-
- इस देश को 'विश्व का कॉफी पॉट' कहा जाता है।-
- इस देश में फुटबॉल लोकप्रिय है।-

देश का नाम – भारतीय गणराज्य

राजधानी का नाम – नई दिल्ली

स्थान, विस्तार एवं सीमा –

भारत पृथ्वी के उत्तर एवं पूर्व गोलार्धों में है। एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग में यह देश स्थित है। आकृति २.१ की सहायता से भारत की मुख्य भूमि का विस्तार बताइए। अंशों के मूल्य रिक्त स्थानों में लिखिए। ......° ४' उ. से ....° ६' उ. अक्षांश व ......° ७' पू. से ......° २५' पू. रेखांश है।

भारत का सुदूर स्थान दक्षिण में इंदिरा पॉइंट है। वह ६°४५' उत्तरी अक्षांश पर स्थित है।

आकृति २.१ का निरीक्षण कीजिए और भारत की

मानचित्र से मित्रता

आकृति २.१ : भारत

सीमा से लगे देशों और जल निकायों के नाम तालिकानुसार कापी में लिखिए ।

दिशा	पड़ोसी देश/ सागर / महासागर
पूर्व	
उत्तर	
पश्चिम	
दक्षिण	

देश का नाम – ब्राज़ील गणराज्य संघ

राजधानी का नाम – ब्रासीलिया

स्थान, विस्तार व सीमा –

ब्राज़ील देश पश्चिम व दक्षिण गोलार्धों में स्थित है। यह देश दक्षिण अमेरिकी महाद्वीप के उत्तरी भाग में स्थित है।

आकृति २.२ की सहायता से इस देश की मुख्य भूमि के विस्तार का अंशीय मूल्य ढूँढ़िए व रिक्त स्थानों में भरें। ......° १५' उ. से ......° ४५' द. अक्षांश एवं ......° ४७' प. से ......° ४८' प. रेखांश।

आकृति २.२ में दिए गए मानचित्र का निरीक्षण कीजिए। ब्राज़ील की सीमा से लगे देश व महासागर ढूँढ़िए। ब्राज़ील के संदर्भ में इन देशों व महासागरों का नाम योग्य स्थान पर तालिका के आधार पर कापी में लिखिए।

दिशा	पड़ोसी देश/ सागर / महासागर
उत्तर	
पश्चिम	
दक्षिण	
पूर्व	

मानचित्र से मित्रता

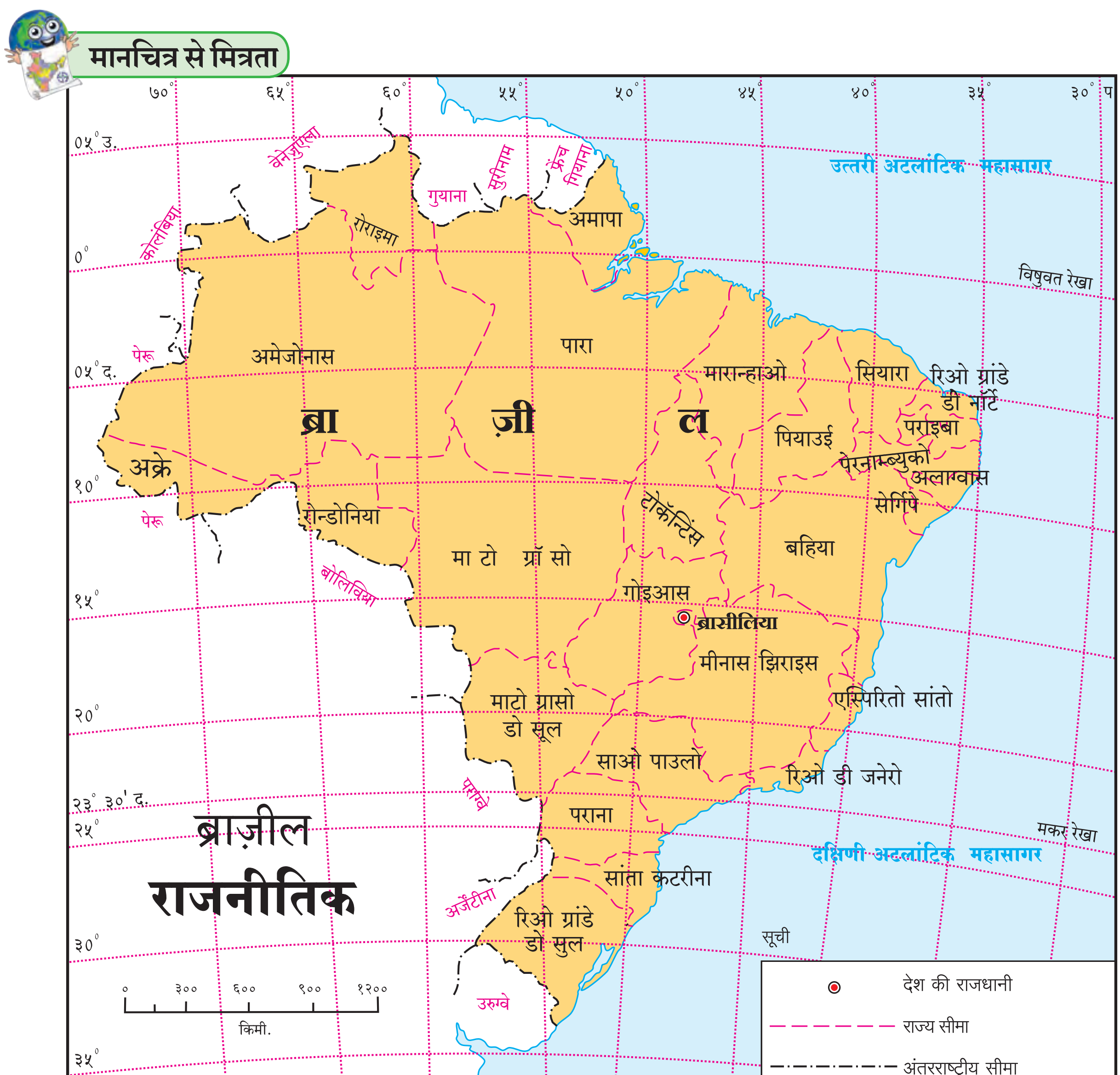

आकृति २.२ : ब्राज़ील

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : भारत

लगभग १५० वर्षों तक भारत देश अंग्रेज़ों के आधिपत्य में था। सन १९४७ में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। स्वतंत्रता के उपरांत पहले बीस वर्षों में तीन युद्धों का सामना करना, अनेक भागों में सूखे का सामना करना आदि अनेक समस्याओं से जूझकर भी भारत विश्व का एक प्रमुख विकासशील देश है। भारत भी आज एक प्रमुख वैश्विक बाज़ार के रूप में जाना जाता है। विभिन्न आर्थिक सुधारों के पश्चात भारत की आर्थिक प्रगति में तेजी आई है।

भारत की जनसंख्या में युवाओं का प्रमाण अधिक है। यहाँ कार्यशील आयु-वर्ग अधिक होने के कारण भारत को एक युवा देश के रूप में जाना जाता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : ब्राज़ील

तीन शताब्दियों से अधिक समय तक यह देश पुर्तगाली शासन के अधीन था। ब्राज़ील को सन १८२२ में स्वतंत्रता प्राप्त हुई। सन १९३० से १९८५ तक, ५० वर्षों से भी अधिक काल, यह देश लोकप्रिय सैन्य शासन के अधीन था।

बीसवीं सदी के अंत में वैश्विक वित्तीय समस्याओं से यह देश उबरा है। विश्व के आर्थिक विकास में योगदान देनेवाला और भविष्य में एक प्रमुख बाज़ार के रूप में ब्राज़ील की ओर देखा जाता है।

आकृति २.३ में निम्नलिखित घटकों को दिखाइए:-

- सभी महाद्वीप एवं महासागरों को दर्शाइये।
- ब्राज़ील एवं भारत को अलग-अलग रंगों से दिखाइए।
- मानचित्र पर विषुवत रेखा दिखाइए और उसका मूल्य अंशों में लिखिए।
- दिशासूचक दिखाइए।

द्वैत के रंग

दोनों देशों के संदर्भ में नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़िए और लिखिए:-

- आपके द्वारा रंगाएँ गए देशों में कौन-सा देश बड़ा है ?
- किस देश का अक्षांशीय विस्तार अधिक है ?
- बताइए कि महाद्वीप के संदर्भ में ब्राज़ील एवं भारत के स्थान अलग कैसे हैं ।
- इन दोनों देशों में कितने-कितने राज्य हैं ?
- अपनी कापी में इन देशों के ध्वज बनाइये ।
- दोनों देशों के प्रतीक-चिह्नों के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

मानचित्र से मित्रता

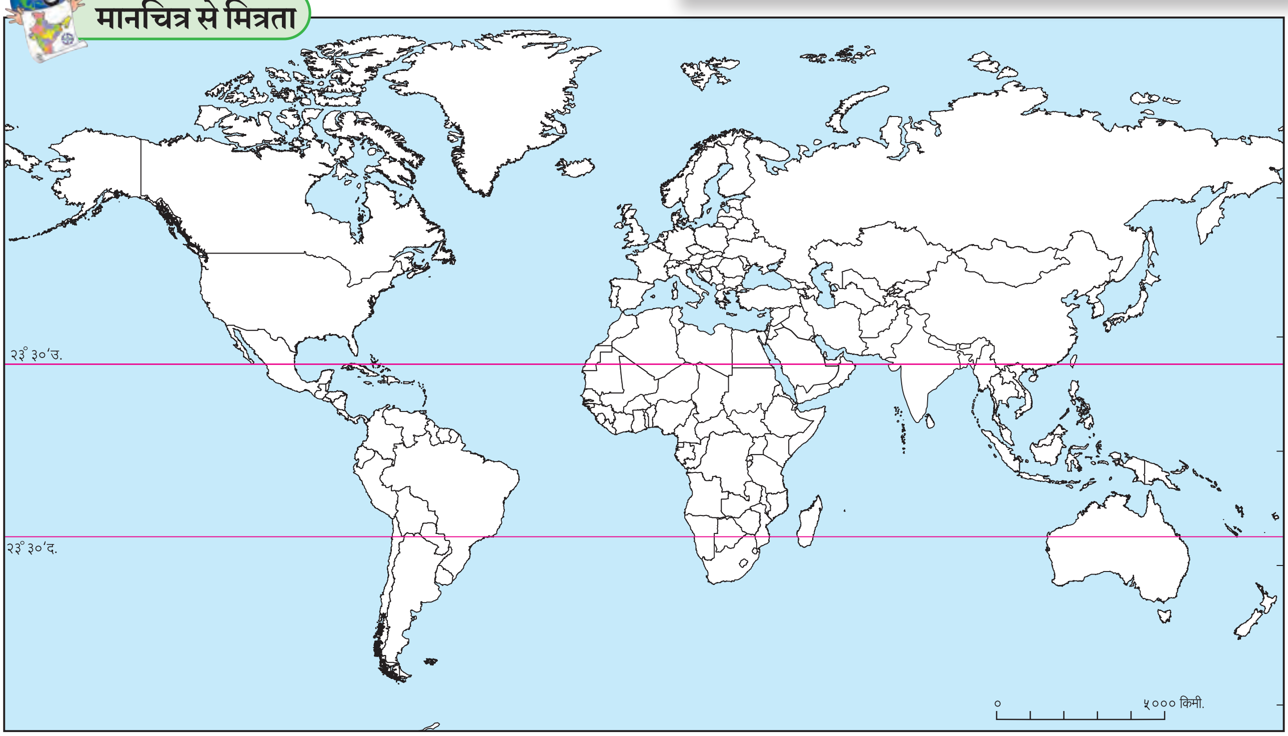

आकृति २.३ : विश्व : मानचित्र प्रारूप

देखिए तो क्या होता है !

- भारत और ब्राज़ील में स्वतंत्रता के बाद क्या अंतर दिखाई देता है ?
- जिस साम्राज्य ने ब्राज़ील पर राज्य किया था, उस साम्राज्य की सत्ता भारत में कहाँ थी ? उसे इस सत्ता से स्वतंत्रता कब प्राप्त हुई ?

क्या आप जानते हैं ?

- हम अपना स्वतंत्रता दिवस १५ अगस्त को मनाते हैं, तो वहीं ब्राज़ील ७ सितंबर को मनाता है।
- भारत में संसदीय गणतंत्र शासन प्रणाली है, वहीं ब्राज़ील में अध्यक्षीय (राष्ट्रपति) शासन प्रणाली है।
- ब्राज़ील का नाम 'पाऊ ब्रासील' नामक स्थानिक वृक्ष के नाम पर पड़ा है।

स्वाध्याय

प्रश्न १. बताइए कि दिए गए वाक्य योग्य हैं या अयोग्य । अयोग्य वाक्यों को सुधार कर पुनः लिखिए।

(अ) ब्राज़ील मुख्य रूप से दक्षिणी गोलार्ध में है।
(आ) भारत के मध्य भाग से मकर रेखा गुजरती है।
(इ) ब्राज़ील का रेखांशीय विस्तार भारत से कम है।
(ई) ब्राज़ील के उत्तरी भाग से भूमध्य रेखा गुजरती है।
(उ) ब्राज़ील प्रशांत महासागर के तट पर स्थित है।
(ऊ) भारत के पश्चिमोत्तर में पाकिस्तान है।
(ए) भारत के दक्षिणी भाग को प्रायद्वीप कहते हैं।

प्रश्न २. संक्षेप में उत्तर लिखिए :

(अ) स्वतंत्रता के उपरांत भारत और ब्राज़ील को किन समस्याओं से जूझना पड़ा ?
(आ) भारत और ब्राज़ील दोनों देशों के स्थान के संदर्भ में क्या-क्या अंतर है ?
(इ) भारत एवं ब्राज़ील के अक्षांशीय एवं रेखांशीय विस्तार बताइए.

प्रश्न ३. सही विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण लिखिए :

(अ) भारत का सूदूर दक्षिणी छोर .... नाम से पहचाना जाता है।
(i) लक्षद्वीप (ii) कन्याकुमारी
(iii) इंदिरा पॉईंट (iv) पोर्ट ब्लेयर

(आ) दक्षिण अमरीका महाद्वीप के दो देश ब्राज़ील की सीमा से नहीं लगे हैं।
(i) चिली-इक्वेडोर
(ii) अर्जेंटीना-बोलिविया
(iii) कोलंबिया-फ्रांसीसी गुयाना
(iv) सुरीनाम-उरुग्वे

(इ) दोनों देशों में .... प्रकार की शासन प्रणाली है।
(i) सैन्य (ii) साम्यवादी
(iii) प्रजातांत्रिक (iv) अध्यक्षीय

(ई) नीचे दिया गया कौन-सा आकार ब्राज़ील के तटीय प्रदेश को उचित प्रकार से दर्शाता है ?

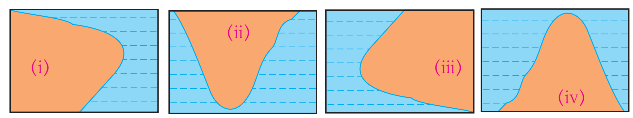

(उ) नीचे दिया गया कौन-सा आकार भारत के तटीय प्रदेश को योग्य प्रकार से दर्शाता है ?

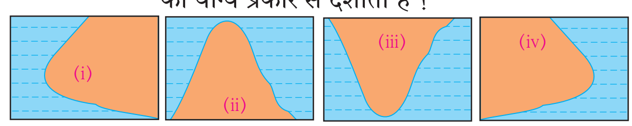

(ऊ) गोलार्धों का विचार करते हुए निम्नांकित पर्यायों में से भारत किस गोलार्ध में है ?

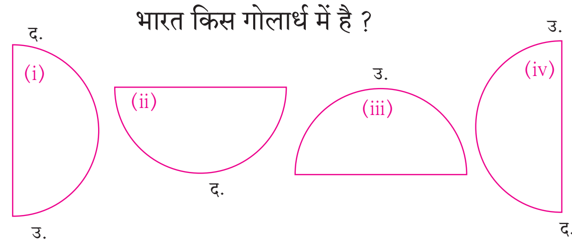

(ए) गोलार्धों का विचार करते हुए निम्नांकित पर्यायों में से ब्राज़ील मुख्यतः किस गोलार्ध में है ?

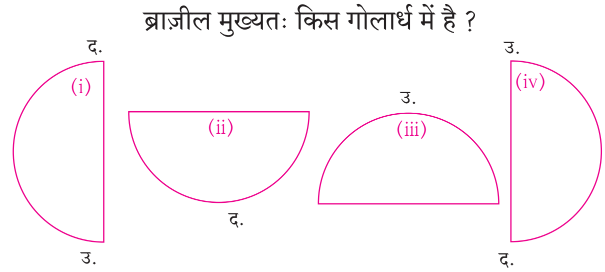

***

RZT7H4